हन्ना अरेण्ट 1906- 1975

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।

दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

मुख्य कार्य

ओरिजिन आफ टोटैलिटेरिएनिज्म 1951

द ह्युमन कण्डीशन 1958

आन रिवोलूशन 1963

आन वायलेन्स 1979

मुख्य विचार

1- सर्वाधिकारवाद

2- स्वतंत्रता

" केवल अभिजन और भीड़ ही आन्दोलनो से आकर्षित होते है । जबकी मध्यम वर्ग को प्रचार से जीता जाता है । "

DR. SHAKEEL HUSAIN

सर्वाधिकारवाद

हन्ना ने The origins of totalitarian नामक अपनी प्रसिद्ध किताब मे इस पर विस्तार से चर्चा की है। उन्होंने सर्वाधिकारवाद को आधुनिक युग अद्भुत और प्रमुख संकट बताया है नाजीवाद फासीवाद और बोल्सेविकवाद

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

इसके प्रमुख रूप है। लेकिन यह किसी भी प्रकार हो सकता है लोकतांत्रिक सरकारे भी सर्वाधिकारवादी हो सकती है ।

हन्ना के अनुसार सर्वाधिकारवाद राजनीतिक आंदोलनो से उत्पन्न होते है । जो वास्तव मे अपने चरित्र में क्रान्तिकारी होने का दावा करते है । अभिजन इसका समर्थन इसलिए करते है। यथास्थिति और स्थापित मूल व्यवस्था को बनाये रखना चाहते है । जबकि भीड़ या सर्वहारा इसका समर्थन इसलिए करते हैं।. क्योंकि उन्हें लगता है कि आंदोलनो और क्रान्ति से व्यवस्था को बदल दिया जायेगा। और वे इस झूठ पर भरोसा कर लेते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि क्रान्तिकारी ताकते मूल्यों के मामले मे पूर्णत: रुढीवादी ही होती है । इसलिए Hannah स्टालिनवाद कीं आलोचना करते हुए लिखती है कि-

" कट्टर से कट्टर क्रान्तिकारी भी क्रान्ति के तुरन्त बाद कट्टर रूढ़ीवादी हो जाता है "

हन्ना के विचार में आंदोलन और क्रांतियां केवल सत्ता प्राप्त करने बल्कि सम्पूर्ण सत्ता प्राप्त के साधन होते हैं । क्योंकि निजी और सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक पक्ष पर पूर्ण अधिकार जगा लेना चाहते है। तथाकथित क्रान्तिकारी और जन आंदोलन अपने मूल चरित्र मे ही सर्वसत्तावादी होते है । इसलिए हन्ना कहती है की

" क्रान्तिकारी लोग मूलत: ऐसे लोग होते है जिन्हे मालूम है कि सत्ता गलियों में पड़ी हुई है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है।"

हन्ना के अनुसार इस सर्वधिकारवाद के कुछ साधन होते है ।

विचारधारा :-

पुराने व्यवस्था के विरुद्ध व्यवस्था परिवर्तन के लिए विचारधारा स्थापित की जाती है और इसे मुक्ति का मार्ग बताया जाता है जो वास्तव अभिजनो द्वारा शासन किये जाने कि परिवर्तित न्मूल्य व्यवस्था से अधिक कुछ नहीं होता इसलिए शासन का स्वरूप सर्वाधिकारवादी बना रहता है।,

छद्म वैज्ञानिक दृष्टि :-

स्टालिनवाद और बोल्शेविंक वाद की आलोचना करते हुए हन्ना ने कहा कि सर्वधिकार वाद को स्थापित करने के लिए वैज्ञानिक समाजवाद' वैज्ञानिक दृष्टि का सहारा लिया जाता है।

व्यवस्था परिवर्तन :-

व्यवस्था परिवर्तन का नारा जन आंदोलन खड़ा करने लिए बेहद जरूरी होता है। विश्व के समस्त सर्वाधिकारवादी शासनों का प्रारंभ इसी नारे से होता है।

अबुद्धिवाद :-

Hannah ने सोरेल एवं नीत्शे का उदाहरण देकर यह बताया कि "भावनात्मकता" भक्ति पूजा, नेतृत्व पूजा आदि अबुद्धिवादी तत्व स्थापित किए जाते है जो सर्वाधिकारवाद के लिए आधार का काम करते है ।

आर्थिक विकास एवं प्रगति :-

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

सर्वाधिकारवादी शासनो विशेष कर हिटलर ने तीव्र आर्थिक विकास द्वारा सर्वाधिकार बाद को सही साबित करने का प्रयास किया। आर्थिक करने का विकास कुछ समय तक अच्छा लगता है लेकिन शीघ्र सामने ही इसकी बुराईया सामने आने लगती है ।

जनहित के नाम पर सत्ता का केन्द्रीयकरण :-

सर्वाधिकारवाद की ये बहुत बड़ी ताकत होती है। क्योंकि जनता व जनहित के नाम पर सत्ता का केन्द्रीयकरण किया जाता है । जबकि वास्तविकता यह है कि धीरे- धीरे जनता की स्वतंत्रता का अपहरण कर लिया जाता है ।

स्वतंत्रता

हन्ना के स्वतंत्रता सम्बन्धी विचार सर्वाधिकारवाद के उपाय के रूप में है। यह सर्वाधिकारवाद के ऊपर प्रतिबंध और सर्वाधिकारवाद से मुक्ति का मार्ग है, और इसी रूप में वह स्वतंत्रता को परिभाषित करती है। उन्हीं के शब्दों में "

"**स्वतंत्रता पारस्परिक सम्बन्धो का एक जाल है । "**

इस दृष्टि से वह स्वतंत्रता को सकरात्मक मानती है क्योकि मानवीय अन्त: क्रिया कि स्थिति में एक व्यक्ति की स्वतंत्रता स्वाभाविक रूप से दूसरे पर प्रतिबंध हो जाती है। जैसे हमे संगीत सुनने की स्वतंत्रता है। साथ ही हमारे पड़ोसी को शांति पूर्वक कार्य करने की भी स्वतंत्रता है। जो कि हमारी तेज से संगीत सुनने मे एक प्रतिबंध स्वत: है। और ऐसा हम आपसी था पारस्परिक सम्मान कारण के कारण सम्करते हैं, न फि राज्य के राज्य से भय के कारण ।

हन्ना के अनुसार स्वतंत्रता का सम्बन्ध राज्य से अधिक मानवीय गतिविधियो से अधिक है । Hannah Arendt ने मानवीय गतिविधिया के तीन प्रकार बताई है :-

श्रम, कार्य, गतिविधि या कार्यवाही ।

1- श्रम :- यह मानवीय गतिविधि का सबसे निचला स्तर है । इसमेव्यक्ति अपने आवश्यक्ताओ की पूर्ति श्रम द्वारा करता है ।

कार्य :-

यह मानवीय गतिविधि का उच्च स्तर है। क्योंकि इसमें शिल्प और सृजनात्मक शक्तिया जागृत होती है। तथा उत्पादन उपयोग से बढ़कर लाभ के लिए होता है। यह मनुष्य की उद्यममशीलता का परिचायक है। इससे उद्योग और सभ्यता का विकास होता है ।

DR. SHAKEEL HUSAIN

गतिविधि या कार्यवाही :-

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

यह मानवीय गतिविधि का सर्वोतम स्तर है। " जन अन्तः क्रिया " है। इसका सम्बन्ध राजनीति से है। अतः यह राजनीतिक गतिविधि है। इससे नये :- नये विचार उत्पन्न होते है। क्योंकि मनुष्य को कार्य की स्वतंत्रता प्राप्त

होती है | Arendi के अनुसार स्वतंत्रता का सम्बन्ध इसी स्तर से है। दर्शन और चिन्तन इसी से उत्पन्न होता है। जिसकी आधुनिक समय में बहुत कमी है।.

यूनानी और आधुनिक राजनीतिक गतिविधि की तुलना एवं स्वतंत्रता:-

Hannah Arendt यूनानी नगर राज्यों की राजनीतिक गतिविधियों की बहुत बडी प्रशंसक थी । उनके अनुसार यूनानी नगर राज्यो की सफलता कारण ही यह था कि यूनानी लोतंत्र" सहभागी लोकतंत्र की सफलता पर आधारित था । जिसमे प्रत्येक नागरिक की सहभागिताअनिवार्य थी । परिणाम स्वरूप सुकरात प्लेटो अरस्तु और पाइथागोरस जैसे गणितज्ञ और दार्शनिक पैदा हो सके ।

किन्तु आधुनिक युग उत्पादन व उपभोग का युग है जिसमे मनुष्य केवल एक उपभोक्ता बनकर रह गया है। और यह गलतफहमी भी सभ्यता के महान युग मे है जबकि पास्तविकता यह है कि आधुनिक युग में हमारी गतिविधिया केवल श्रम और कार्य तक सीमीत है इसमे कार्यवाही अर्थात "लोक अन्तक्रिया ? के लिए समय ही नहीं है। जिसके कारण मनुष्य कि सृजनात्मक शक्तियाँ सुप्त हो गयी है। और स्वतंत्रता का अभाव रहा है।

मूल्यांकन

इस प्रकार Hannah Arendt जो कि जर्मनी से एक विस्थापित यहूदी थी उन्होंने सर्वाधिकारवाद की उत्पत्ति और उसके कारण उसमे बचाव के रुप में स्वतंत्रता का विश्लेषण किया और स्वतंत्रता को मानव की सर्वोच्च राजनीतिक गतिविधि बनाया जो निश्चित रूप राजनीतिक चिन्तन मे महत्वपूर्ण योगदान ।

गृह कार्य

1- स्वतंत्रता पर हन्ना के विचार बताइए ।

2- सर्वाधिकारवाद को हन्ना ने आधुनिक युग की सबसे बड़ी समस्या क्यो बताया है ।

3- सर्वाधिकारवाद पर हन्ना के विचारो की समीक्षा कीजिए ।

संदर्भ

Arendt H. (1950) : *origin of totalitarianism* penguin London.

https://www.loc.gov/collections/hannah-arendt-papers/about-this-collection/

https://www.britannica.com/biography/Hannah-Arendt

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Feed Back link

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE